मंथन

26 जनवरी, 2022

स्टाफ क्लब

सीएसआईआर- हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान

पालमपुर, हिमाचल प्रदेश, भारत

मंथन

स्टाफ क्लब, सी.एस.आई.आर.- हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर

वर्ष 16 अंक 1 26 जनवरी, 2022

आमुख

स्टाफ क्लब की पत्रिका "मंथन" 2022 का पहला अंक आपके समकक्ष प्रस्तुत है। आपके अन्दर विद्यमान वे प्रतिभायें, जिन्हें आप बोल कर या अन्य किसी रूप में व्यक्त नहीं कर सकते, उन्हें मंथन के माध्यम से लघुलेख, कथा, कलाकृति, रेखाचित्र, कविता या अन्य किसी भी रूप में व्यक्त कर सकते हैं तथा छिपी प्रतिभा को निखार सकते हैं।

"मंथन की भावना है-भावनाओं का मंथन"

स्टाफ क्लब के सभी सदस्यों एवं उनके परिजनों से निवेदन है, कि वे मंथन के आगामी अंकों के लिए भी प्रविष्टियां देते रहें, ताकि मंथन के आने वाले अंक समय से प्रकाशित किया जा सके।

इस अंक में प्रविष्टियां देने एवं सहयोग करने वालों का स्टाफ क्लब की ओर से धन्यवाद।

संपादक: अरुण कुमार

संकलन: सौरभ शर्मा

विषय सूची

क्रम संख्या	शीर्षक	लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	मन की आवाज़	स्मिता कपूर	03
2.	शिक्षित, साहसी और मेहनती महिलाएं	अवनेश कुमारी	04
3.	तेरे शहर से तो मेरा गाँव अच्छा है	सहदेव चौधरी	05
4.	Vikram Batra-The Soul of Bravery	Vivek Das	06
5.	गंतव्य जल्दी में है	शशी भूषण	07
6.	जीनोम- एडिटिंग द्वारा खाद्य सुरक्षा से जुड़ी सामाजिक धारणाएँ एवं समाधान	मेघना पटियाल, शुभम जोशी किरन देवी एवं रोहित जोशी	08

हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान के परिवार के बच्चों की कृतियाँ

1.	नाइषा उपाध्याय	09
2.	तन्मय शर्मा	10
3.	हर्शिनी रेड्डी	11
4.	समीर हल्लन	12
5.	अनिल कुमार	13
6.	महक शर्मा	14
7.	अशकिनी शर्मा	15
8.	सतमन्यु सिंह	16
9.	शरीन काचरा	17
10.	अथर्व राणा	18
11.	आर्यन पड़वड़	19
12.	निशांत रेड्डी	20
13.	आकर्ष पांडे	21
14.	वामीका पांडे	22
15.	अथर्व चौहान	23
16.	आर्यन पड़वड़	24
16.	तन्मय शर्मा	25
17.	अर्किता	26

मन की आवाज़

काश अपने मन की आवाज़ को हम सच में आवाज़ दे पाते

तो हो सकता है हम सब इक अलग किस्म की जिंदगी जी पाते

मन में सौ सपनों को सिर्फ बुनते ही नहीं, उन्हें हकीकत से भी रूबरू करवा पाते

किसी और की शर्तों पे न जी कर, शायद ! सिर्फ अपनी शर्तों के हिसाब से जी पाते

अगर हम मन की आवाज़ को सच में आवाज़ दे पाते तो इक

खूबसूरत सच्ची जिंदगी जी पाते

किसी को अपना-पराया बनाने की कोशिश ही न करते ,

ना ही जिंदगी की उलझनों में फसते

सीधी सी रहती मंजिलें और आसान से हो जाते रस्ते ।।।

जिंदगी को समझते नहीं बस जीते जाते, अपने हिसाब से बस हर गीत गुनगुनाते

किसी और पर ध्यान न दे कर अगर खुद पे ध्यान दे पाते

तो शायद हर मंजिल को सुकून से हासिल कर जाते !!

किसी और से बेहतर होने की कोई साजिश न होती, बस हम खुद से बेहतर बने ये एक

सच्ची कोशिश होती और जिंदगी बस और खूबसूरत हो जाती ।।।।

काश हम मन की आवाज़ को सच में आवाज़ दे पाते !!!!!!!

स्मिता कपूर

शिक्षित, साहसी और मेहनती महिलाएं

शिक्षित महिलाओं ने अपने परिवारों को बख़ूबी संभाला है।

और उनके परिवार अब पहले से बेहतर जिंदगी जी रहे हैं।

शिक्षित महिलाएं अब अपने ख़र्चों और वित के लिए अपने पतियों पर निर्भर नहीं हैं।

इस देश की महिलाएं, आप अपने लिए रोटी कमाने वाली बन गई हैं।

हिन्द की महिलाएं, आप कोई एहसान नहीं माँगती बल्कि माँगती हैं।

जीवन के सभी क्षेत्रों में बराबर अवसर पोषण और विकास के लिए।

खेल कूद हो या चाहे हो अंतरिक्ष।

शिक्षित महिलाएं एक बहन, बेटी,पत्नी, माँ, दादी, एक व्यवसायी,

एक शिक्षक,वैज्ञानिक, और एक नर्स भी हैं।

अगर लिखने लगे तो यह सूची अंतहीन है।

आपने कठिन परिस्थितियों पर साहसपूर्वक आक्रमण किया है और

आपने विजय भी प्राप्त की है।

आप जिस चीज में विश्वास करती हैं उसके लिए आप खड़ी हुई हैं।

आपके सपने सच हुए हैं, आपकी मनोकामनाएं पूरी हुई हैं।

शिक्षित साहसी महिलाओं डटी रहो और कभी हार मत मानो।

परिवार की उम्मीद आप पर है।

हिम्मत वाली शिक्षित महिलाओं को नमन है।

अवनेश कुमारी

तेरे शहर से तो मेरा गाँव अच्छा है

बड़ा भोला, बड़ा सादा , बड़ा सच्चा है।

तेरे शहर से तो मेरा गाँव अच्छा है ॥

गाँव में पिता के नाम से जाना जाता हूँ।

और शहर में मकान नम्बर से पहचाना जाता हूँ ॥

गाँव में फटे कपड़ों में भी तन को ढका जाता है।

शहर में खुले बदन पर टैंटू छापा जाता है ॥

शहर में कोठी हैं , बंगले हैं, और कार हैं ।

गाँव में परिवार है , संस्कृति है, और संस्कार हैं।

शहरों में चीखों की आवाजें, दीवारों से टकराती हैं।

गाँव में दूसरों की सिसकियाँ भी सुन ली जाती हैं॥

शहर में शोर - शराबे में कहीं खो जाता हूँ मैं ।

अपने गाँव में टूटी खटिया पर भी आराम से सो जाता हूँ मैं ॥

मत समझो कम हमें कि हम गाँव से आये हैं।

तेरे शहर के बाजार भी तो, मेरे गाँव ने सजाये हैं॥

मेरे गाँव में बडों की इज्जत में , सिर, सूरज की तरह ढलते हैं।

चलो आज फिर अपने ही गाँव चलते हैं ॥

सहदेव चौधरी

Vikram Batra-The Soul of Bravery

Have you ever heard this tale,
A tale of a mortal,
Whose valour didn't made his name be gone,
He resides in each of our soul.

He was the only one,
Who didn't fear terrain,
He gave cover to others,
Be it drought or flooding rain.

The enemies underestimated,
As they defeated many, for their sake,
But their foresight was miss-thought,
They didn't knew, the Shershah was awake.

They fell and fell and fell,
Taken aback by his strikes and roars,
The opposers broke to sand,
To the top, our lion's group soared.

Enemies, so terrified, prayed,
Prayed to God to forgive their deeds,
Wished they didn't face him again,
Shershah was he, indeed!

The whole nation celebrated,
The highest of awards were ready to come,
But the Lion knew, the task was pending,
Enemies were to be wiped from his mother nation.

Started the Shershah, his campaign,
With troop, which was smaller,
But the devils outnumbered him this time,
He received his life's first, yet last valour.

The enemies were wiped out,
May the awards enlighten soul of the Shershah,
But fall of enemy, was what he wanted,
This was legend of the invincible Vikram Batra.

Vivek Das

गंतव्य जल्दी में है

आज सुबह 15 मिनट की कार ड्राइव करते हुए मैंने पाया कि इंसान नहीं, शायद हमारे गंतव्य बहुत जल्दी में है। अभी मैं लिंक रोड से मुख्य हाइवे पर पहुँचा ही था कि एक तेज गति वाले बाइक से मेरा सामना हुआ। जो मुझे शायद याद दिला गया कि मैं अब हाइवे पर पहुँच गया हूँ। खैर, मैंने खुद को संभाला और गाड़ियों कि एक लंबी कतार में चलने लग गया। मुश्किल से 3-4 किलोमीटर चला था, कि मेरे से आगे चल रही गाड़ी वाले को शायद गंतव्य का इशारा मिला और उसने 2-3 गाड़ियों को ओवरटेक करने के लिए सफल प्रयास किया। फिर क्या था, गाड़ी वाले को लगा कि उसकी मंजिल का रास्ता साफ है। देखते ही देखते उसने एक ट्रक को भी पीछे छोड़ दिया। और मैं 5-6 गाड़ीयां पीछे चला अभी सोच ही रहा था, कि देखो तो मंजिल का कमाल, कि तभी एक ज़ोर का धमाका हुआ। मैं संभला और आवाज कि दिशा में देखने लगा। मुझे एहसास हुआ कि, वही गाड़ी वाला ओवरटेक लेने के लिए थोड़ा ज्यादा बाहर निकल गया और सड़क किनारे, जमीन पर ऊपर उठे हुये एक पथर से ड्राईवर साइड वाला टायर ज़ोर से लग कर फट गया। जब में वहाँ से निकला तो देखा कि गाड़ी के अंदर ड्राईवर के साथ दो छोटे बच्चे और एक महिला थी। लग रहा था कि शायद किसी शादी में जा रहे हों। मैंने भगवान का शुक्रिया किया, कि सब सुरक्षित थे। लेकिन मुझे उनके गंतव्य पर दया आ गई कि बेचारा कितना निराश होगा।

इतना होने के बाद अब मुझे पूरी उम्मीद थी कि बाकी चल रहे वाहन, यात्रियों को उनकी मंजिल पर समय रहते पहुँचा देंगे। आधा किलोमीटर निकलते-निकलते घटना मेरे मानसिक पटल से धूमिल होने लगी थी। और मैं एफ़एम में लगे सुबह के समाचारों पर ध्यान केंद्रित करने लगा। तभी मोटरसाइकल पर सवार एक नौजवान हवा से बातें करता हुआ तीव्रवेग से मेरे पास से गुजरा। ऐसा लगा कि इसका गंतव्य भी जल्दी में है। मैं मुश्किल से दो मोड और गया था, कि सड़क किनारे मैंने नाले के बीच, वो ही मोटरसाइकल गिरि पड़ी देखी। मुझे उस पर सवार नौजवान कहीं नहीं दिख रहा था। मैं चिंतित था कि कहीं उसने भी अपने गंतव्य को निराश तो नहीं कर दिया।

किसी को अधिकार नहीं है कि वो अपने गंतव्य को ठेस पहुंचाए। मंजिलें तो कई आएंगी, पर गंतव्य..... मैं उम्मीद करता हूँ, कि पाठक मेरे आश्रये को समझ गए होंगे। बहुत मंजिलें अभी बाकी हैं दोस्तो।

सुरक्षित ड्राइव ही सुरक्षित ज़िंदगी है।

शशी भूषण

जीनोम- एडिटिंग द्वारा खाद्य सुरक्षा से जुड़ी सामाजिक धारणाएँ एवं समाधान

मानव प्रजाति के लिए पर्याप्त मात्रा में भोजन की उपलब्धि वर्तमान में घटती कृषि योग्य भूमि, संसाधनो में कमी और बदलती जलवायु परिस्थितियों के कारण एक चुनौती बनती जा रही है। CRISPR/Cas9 तकनीक में हुई अभूपूर्व प्रगति ने, जलवायु परिस्थितियों में बदलाव के कारण उत्तपन हुए जटिल अजैविक तनावों के प्रभाव से मुक्त फसलों के प्रजनन की नई संभावनाओं को खोला है। CRISPR जीनोम में बदलाव के लिए प्रयुक्त एक सरल, सशक्त एवं सटीक तकनीक है, जिससे जीव के जीनोम (डीएनए का पूरा विवरण) को आवश्याकतानुसार बदल सकते हैं। CRISPR डीएनए में पाये जाने वाले विशेष खंड होते हैं जिससे Cas9 (एंजाइम) को कैंची की तरह प्रयोग कर इच्छित बदलाव लाया जा सकता है। अजैविक तनाव मुक्त फसलों के प्रजनन में लगे वैज्ञानिकों के लिए बहुत आशाजनक है। परंतु, इस विधि द्वारा विकसित ट्रांसजेनिक म्यूटेंट पौधे अब भी सार्वजनिक और सामाजिक स्वीकृति से संबन्धित गंभीर मुद्दों का सामना कर रहे हैं। जीनोम-एडिटिंग के नियमन पर नैतिक विचार-विमर्श, आणविक प्रजनन, प्रौद्योगिकियों की स्वीकृति के लिए सामाजिक और नियामक स्थितियों को दर्शाता है। इसमें पौधे जीनोम -एडिटिंग के कार्यान्वयन में भूमिका निभाने वाले मानक सिद्धांतों का औचित्य, सामाजिक धारणाओं और विभिन्न हितों का विश्लेषण शामिल है। हालांकि, इन तकनीकों को अपनाने के लिए, विभिन्न देश 'आनुवंशिक रूप से संशोधित जैव सुरक्षा नियमों' के अंतर्गत इन्हें विनियमित करने के लिए कानून और नियामक ढांचे विकसित कर रहे हैं।

चूंकि, खाद्य पदार्थों के नामांकरण और उपभोक्ता की पसंद, मूल्यों का समर्थन करने और जीनोम-एडिटेड उत्पादों के कृषि उपयोग परिप्रेक्ष्य को व्यापक बनाने के लिए मुख्य भूमिका निभाते हैं। अतः विनियामक अनुमोदन और व्यावसायीकरण के लिए जीनोम-एडिटेड पौधों को ट्रांसजीन मुक्त होना अति आवश्यक है। जीनोम-संपादित पौधों को ट्रांसजीन से मुक्त, ऑफ-टारगेट म्यूटेशन और जीन एकीकरण सबसे महत्वपूर्ण चुनौतियां हैं। हाल ही में ट्रांसजीन मुक्त जीनोम-एडिटिंग के लिए CRISPR/ Cas9 राइबोन्यूक्लियोप्रोटीन का प्रयोग किया गया और पिगीबैक, Cre/loxP, और FLP/FRT ट्रांसपोसॉन विधियों का प्रयोग करके तंबाकू, पालक चावल इत्यादि के ट्रांसजीन मुक्त जीनोम-एडिटेड पौध विकसित किए गये। अध्ययनों में यह भी प्रदर्शित किया गया है की बैकक्रॉसिंग या सेल्फिंग या सेग्रीगेशन के माध्यम से जीनोम-एडिटिंग के बाद Cas9 मुक्त पौधों का उत्पादन किया जा सकता है। कम समय और श्रम के साथ व्यावसायीकरण के लिए ट्रांसजीन मुक्त जीनोम संपादित फसलों के विकास के लिए ये रणनीतियां बेहद उपयुक्त हैं।

चूंकि खाद्य और पोषण सुरक्षा के लिए संधारणिय फसलों के उत्पादन की आवश्यकता होती है, इसीलिए सतत प्रयासों द्वाराअल्पावधि में ही व्यावसायीकरण के लिए उपयुक्त ट्रांसजीन-मुक्त जीनोम-एडिटेड फसलों का उत्पादन बेहद ज़रूरी हैं।

मेघना पटियाल, शुभम जोशी, किरन देवी एवं रोहित जोशी

नाइषा उपाध्याय

तन्मय शर्मा

हर्शिनी रेड्डी

ORIGAMI TO ASTONISH AND AMUSE

Hello friends, Let me introduce Origami to you all. What is origami? where it was invented? Origami is an art of Paper folding technique. It was first designed in Japan a thousand years ago. But its roots may well be in China. It was Designed by Yoshizawa Akira. It was designed before the paper was invented so, they used some type of leather. There are many benefits of doing origami. Origami helps **develop hand-eye coordination, fine motor skills, and mental concentration.**
The best part is that it uses no tape or glue it is totally based on paper locks, pockets.

समीर हल्लन

अनिल कुमार

महक शर्मा

अशकिनी शर्मा

सतमन्यु सिंह

शरीन काचरा

अथर्व राणा

Happy childrens Day
Father of Nation
Name - Aryan Padwad
class - 5th B

आर्यन पड़वड़

निशांत रेड्डी

GO CORONA GO!!
AKARSH PANDEY
Covid Vaccine Dose-II
Covid Vaccine Dose-I
Booster Dose

आकर्ष पांडे

वामीका पांडे

अथर्व चौहान

आर्यन पड़वड़

तन्मय शर्मा

अर्किता

सी.एस.आई.आर.–हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान

CSIR-IHBT

1983